



आम का अनियमित फलन

डॉ. अरुण कुमार सिंह

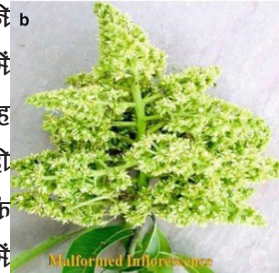
सह-सहायक प्राध्यापक, फल विज्ञान

आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं पौधोद्योगिक

विश्वविद्यालय कुमारगंज,

अयोध्या, उत्तर प्रदेश

अज राज्य में फल उत्पादन के अधिक सार्थक प्रतीत होता है। पौधा लगाने से वैज्ञानिक ऐसा सोचते हैं कि यदि पेड़ में अंतर्गत आने वाले क्षेत्र का के बाद आम का ग्राफ्ट (कलम) 4-5 वर्षों प्ररोह जल्द निकल जाय और नवम्बर तक आधा भाग केवल इसी फल में फलना शुरू करता है। यदि कोई विशेष परिपक्व हो जाये तो इनके फूलने की संभा. से परिपूर्ण है। राज्य के हर हिस्से में आम प्राकृतिक प्रकोप नहीं हुआ तो अगले 4-5 वन अच्छी रहेगी। पर हाल के खोजों से यह के छोटे-बड़े बाग मिलते हैं तथा इनमें कई वर्षों तक वह प्रायः हर वर्ष मंजर देता है और ज्ञात हुआ है कि वास्तव में प्ररोह की परिप. किरमों के आम पाये जाते हैं। यों तो आम फल भी। यदि किसी वर्ष किसी कारण से क्वता इस किसिले में कम महत्व रखती के पौधे प्रारंभ में नियमित रूप से प्रति बहुत अधिक फल लग जाय या सभी मंजर है। यथार्थ में यदि पेड़ फूलने की दशा में हों वर्ष फल देते हैं पर 9-10° अल्प विकसित फलों के साथ झड़ तो प्ररोह कुछ ही महीने के हों या बिल्कुल वर्ष की अवस्था आते-आते जाय तो उसके बाद नये हो या न भी हों तो भी पेड़ में फूल आ उनका फलन अनियमित हो जाय तो उसके बाद नये हो या न भी हों तो भी पेड़ में फूल आ जाता है यानि उनसे प्रति पौधों के फलने का क्रम बदल सकता है। पेड़ पर लगे फलों का भार प्ररोहों वर्ष फल की प्राप्ति नहीं जाय तो उसके बाद नये हो या न भी हों तो भी पेड़ में फूल आ होती। अब यदि किसी वर्ष पौधों के फलने का क्रम बदल सकता है। पेड़ पर लगे फलों का भार प्ररोहों आम की भरपूर फसल मिलती है तो उससे का कारण प्रतिवर्ष संतुलित मात्रा में नये के फूल आने के लिए प्ररोहों में नाइट्रोजन अगले वर्ष वृक्ष बिल्कुल नहीं फलते और फिर प्ररोह (कोमल पत्तों से युक्त नयी डालियाँ) और कार्बोहाइड्रेट (विशेषकर स्टार्च) की दो वर्षों के अंतर से फलने का प्रायः एक देने तथा फूल संवहन करने का मात्रा अधिक होनी चाहिए। निश्चित क्रम बन जाता है। इस क्रम को की क्षमता है। बाद के वर्षों में इसके अतिरिक्त आक्सिजन सद्ग्राह्य पदार्थों, निरोधक तत्वों का आम का 'द्विवार्षिक या द्विवार्षिक' फलन की यह संतुलन कायम नहीं रह पाता और समस्या शुरू हो स्तर ऊँचा और जिबैलिन सद्ग्राह्य संज्ञा दी जाती है। यह क्रम सभी जातियों पाता और समस्या शुरू हो हार्मोन का स्तर नीचा होना (किरमों) तथा एक ही जाति के सभी वृक्षों में जाती है। ऐसा देखा गया है कि चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो एक-सा नहीं होता। अनियमित फलने वाली किरमों प्ररोह फूलने में असमर्थ होंगे।



बाग के रखरखाव में निरंतर लाप. जब फलों से लदी होती है तो राज्य की अधिकांश किरमों (जो व्यावसायिक रवाही के कारण दो फलन के बीच का यह नये प्ररोह नहीं फेंकती। फल तोड़ने के बाद दृष्टि से अति लाभकर और श्रेष्ठ हैं) में समय दो वर्ष न होकर कभी-कभी तीन वर्ष भी नये प्ररोह नगण्य मात्रा में आते हैं और यह समस्या अधिक प्रबल है। दक्षिण भ. भी हो जाया करता है और तब द्विवार्षिक जो आते भी हैं उनमें अगले साल फूलने की रत की कुछ किरमों जैसे: बंगलौरा, नीलम, फल की संज्ञा कुछ असंगत-सी जाँ पड़ती क्षमता नहीं रहती। पूर्ण रूप से नये प्ररोहों का दुर्भाव आलमपुर, बनिरान और बिहार की एक है। पुनः उचित देख-भाल और प्राकृतिक अगले साल के वसंत ऋतु में ही होता है और किरम फजली देश के हर हिस्से में प्रतिवर्ष अनुकूलता के कारण यदा-कदा कुछ खास ये प्ररोह वर्तमान साल में न फूलकर अगले फल देती है। वारह मासी किरम से वर्ष में अवधि के लिए यह अंतर मिट भी सकता है साल में फूलते हैं। अतः बीज में एक और एक बार से अधिक फल मिलते हैं। प्रकृति और वृक्षों से लगातार सामान्य फल मिल साल का अंतर हो जाता है जो द्विवार्षिक या में इन किरमों के नियमित फलन से ऐसा सकते हैं। अतः आम के फलने की क्रिया को अनियमित फल का कारण बनता है। बहुत विश्वास किया जाता है कि अन्य किरमों में द्विवार्षिक के वजाय अनियमित कहा जाना

द्विवार्षिक या अनियमित फलन की प्रवृत्ति उनके अनुवांशिक गुणों के कारण ही है।

मंजरों में नर तथा उभयलिंगी (द्विलिंगी) फूलों का अनुपात भी वृक्षों के फलने की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। चूँकि उभयलिंगी फल ही उचित परागण और निषेचन के बाद फल देते हैं जिन किस्मों के मंजरों में इन फूलों की संख्या अधिक होती है वृक्षों को देखा गया है कि वे फलने में ज्यादा अनियमित होती है। अधिक उभयलिंगी फूलों के कारण किसी वर्ष तो ऐसी किस्मों के वृक्ष इतना अधिक फल दे जाते हैं कि फलों की तुड़ाई के बाद उनके प्ररोहों की आंतरिक रसायनिक संरचना में असंतुलन पैदा हो जाता है और अगले वर्ष ये प्रायः फूल या फल देने योग्य नहीं रह पाते। 'लंगड़ा' और 'दहाहरी' के मंजरों में उभयलिंगी फूलों की संख्या क्रमशः 69 और 31 प्रतिशत है। ये किस्मों फलने में अधिक अनियमित पायी गयी है। दूसरी ओर किस्मों में ऐसे फूलों की संख्या कम पायी जाती है जैसे वृ नीलम (16 प्रतिशत), आलमपुर वनिरान (3 प्रतिशत), जहाँगीर (1 प्रतिशत), वे प्रायः प्रतिवर्ष फलती है। इन किस्मों में कम फल लगने की क्रिया ही इनके नियमित फलन के लिए उत्तरदायी है। फिर ऐसा भी देखा गया है कि जिन किस्मों में अणवर्ती पुष्पक्रम (मंजर) की अधिकता रहती है वे कक्षवर्ती पुष्पक्रमों की अधिकता वाली किस्मों की उपेक्षा अधिक अनियमित फल देती है। चूँकि हमारे यहाँ की सभी श्रेष्ठ किस्मों में अणवर्ती पुष्पक्रमों की संख्या अधिक रहती है वे प्रति वर्ष सामान्य रूप से नहीं फलती। पुनः अनियमित फलन वाली किस्मों के पुष्पक्रम शुद्ध होते हैं अर्थात् उनमें केवल फूल ही रहते हैं साथ में पत्तियाँ नहीं होती। 'फजली' के पुष्पक्रमों में पत्तियाँ भी रहती है। अतः यह प्रति वर्ष फल देती है। ऐसी पत्तियों की संख्या 'बारहमासी' में बहुत अधिक होती है और यह किस्म साल में दो बार फलती है। सारांश यह कि पुष्पक्रम या मंजर के साथ पत्तियों का होना या न होना

भी अगले वर्ष के फलन पर प्रभाव डालता है।

हर वर्षफलन के अनुकूल सभी परिस्थितियाँ नहीं होती, क्योंकि मिट्टी और विशेषकर जलवायु में परिवर्तन होता रहता है। फिर बहुवर्षी वृक्ष होने के कारण, आम के वृक्ष पर इन सबका तत्कालीन तथा दीर्घकालीन प्रभाव भी पड़ता है। परिणामतः हर वर्ष तथा हर वृक्ष (चाहे वे एक ही किस्म के क्यों न हों) का फलन अलग-अलग ढंग से होता है। चूँकि आम में फलन की जटिल समस्या उनके प्रभावों का सम्मिलित परिणाम है, इसके निराकरण के लिए किसी एक उपाय का अपनाना जाना एक असफल प्रयास साबित हो सकता है। अतः उत्पादकों को चाहिए कि वे समाधान की दिशा में निम्नलिखित सुझाव अपनाने और वृक्षों से अपेक्षित फल प्राप्त करें:

1. पेड़ों को हमेशा उचित देख-भाल से अच्छी हालत में रखें। उपयुक्त समय पर सिंचाई, खाद, खर-पतवार निकालना, कीड़ों तथा रोगों का नियंत्रण आदि पेड़ों में फलन को सुनिश्चित करता है। इन क्रियाओं से अनियमित फलन पूर्ण रूप से तो नहीं रोका जा सकता पर इसके असर को कम किया जा सकता है। पौधा लगाने से लेकर पहला मंजर निकलने तक खाद-पानी देने में इस बात का ध्यान रखें कि मर्च तक काफी पानी दिया जाय और सितम्बर से दिसम्बर तक एक दम नहीं। खाद केवल जून-जुलाई में दें। मंजर निकलने पर फूल या फल लगते वक्त पानी न देकर अप्रैल-मई में काफी सिंचाई करें। जाड़े में एकदम नहीं।

2. बरसात में अगर वर्षा नहीं हो तो सिंचाई की व्यवस्था करें। शुरू से भी बाग की तीन जुताई अर्थात् पहली वर्षा के साथ जून में, वर्षा के ठीक बाद अक्टूबर में, तथा वसंत के आरंभ यानि जनवरी में अवश्य करें। इससे बहुत लाभ होता है। मंजर आने के बाद खाद देने का तरीका थोड़ा बदल जाता है। यदि मंजर कम मात्रा में आये हों तो उस वर्ष जून-जुलाई में प्रति प्रौढ़ वृक्ष (20 वर्ष), 1 किलोग्राम यूरिया तथा आधा

किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटेश का व्यवहार करें। फिर सितम्बर-अक्टूबर में 50-60 किलो कम्पोस्ट, दो किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा आधा किलो म्यूरेट ऑफ पोटेश डालें। जिस वर्ष मंजर अधिक आये उस वर्ष यूरिया 2.5 किलोग्राम दें और अन्य उर्वरकों की मात्रा पूर्ववत् ही रखें।

वृक्षों पर लगने वाले कीड़े तथा बीमारियों की रोकथाम के लिए समयोचित उपयुक्त दवाओं का छिड़काव जरूरी है।

मधुआ (हॉपर) के लिए फूल आने के पूर्व रोगर (0.1 प्रतिशत) का प्रयोग करें एवं 1 मिमी बग की रोकथाम के लिए फूल आने से पहले तने के



असपास अल्काथीन बैंड का प्रयोग करें।
3. पैक्लोब्युट्रांजोल नामक रसायन जो बाजार में "कल्टार" नाम से मिलता है का प्रयोग आम के फल को नियमित करने में लाभकारी होता है। इसका प्रयोग सितम्बर के अंत या अक्टूबर महीने में करना चाहिए। इस रसायन की मात्रा वृक्ष की आयु एवं उसके डालियों के फैलाव के मुताबिक तय की जाती है। वृक्ष के फैलाव घेरे के व्यास को ध्यान में रखते हुए दवा इस्तेमाल करने की अनुशांसा की गयी है। वृक्ष के फैलाव घेरा का व्यास यदि 5 मीटर होगा तो 15 मि.ली. दवा की आवश्यकता पड़ेगी। यानि प्रति मीटर व्यास के लिए 3 मि.ली. दवा आवश्यक होती है। दवा की सही मात्रा वृक्ष के जड़ क्षेत्र में समानरूप से व्यवहार करना चाहिए। इसके लिए वृक्ष के चारों ओर 4-10" गहरा छेद बना लेना चाहिए और उसी छेद में दवा की वांछित मात्रा डालनी चाहिए। दवा को पानी में घोलकर उसकी मात्रा बढ़ायी जा सकती है। इससे व्यवहार करने में सुविधा रहती है। यह दवा वानस्पतिक वृद्धि रोकता है और वृक्षों को न फलनेवाले वर्ष में भी फलधारण करने के लिए प्रेरित करता है।